International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 2, February 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# शैलेश–मटियानी कृत्त पोस्टमैन कहानी में डाकिया दयाराम की कर्त्तव्य–परायणता

(सोनिया देवी)

एम फिल शोधकर्ता, भगवंत विश्वविधालय अजमेर राजस्थान

''पोस्टमैन'' कहानी ''श्री शैलेश मटियानी'' द्वारा रचित है। इस कहानी में लेखक ने डाकिया दयाराम का अपनी नौकरी के प्रति कर्त्तव्य–परायणता का चित्रण बड़े अच्छे ढंग से किया है। कर्त्तव्यपरायणता पर मानव सब कुछ कुर्बान कर देता है। दयाराम के चरित्र के माध्यम से यही सिद्ध होता है कि नवयुवक दयाराम कर्त्तव्य संवेदना का कितना अधिक धनी था।

दयाराम मैट्रिक पास नवयुवक था। मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद वह घर में बेकार बैठा था। उसके पिता हरकारे का काम करते थे। उन्हीं के अधिक प्रयास से दयाराम को पोस्टमैन की नौकरी मिली थी। उसके पिता ने ही ''शहर में पोस्टमास्टर की जी हजूरी करके और उसके घर ककड़ी तथा लौकी के बोरे पहुँचा कर दयाराम को पोस्टमैन की नौकरी दिलवाई थी।'' (पृ. 160)

दयाराम हफ्ते में दो बार कमस्यारी तथा उसके निकटवर्टी गाँवों में पोस्टमैन की डयूटी के लिए जाया करता था। उस गाँव के लोग दयाराम का बहुत आदर–सम्मान किया करते थे।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

''पोस्टमैन'' कहानी में डाकिया दयाराम की कर्त्तव्यपरायणता के साथ–साथ लोगों का उसके प्रति सम्मान भी दिखाया गया है। एक दिन दयाराम कमस्यारी गाँव के प्रधान जसौत सिंह नेगी के घर चिट्ठी देने जहाता है। वहाँ वह उसे उसके पुत्र द्वारा लिखी हुई चिट्ठी स्वंय पढ़कर सुनाता है। जसौत सिंह के बैटे ने चिट्ठी बड़े ही बेढंगे तरीके से लिखी थी। अक्षर भी आधे–अधूरे कटे हुए थे। दयाराम ने हँसकर जसौत सिंह को सारा पत्र सुनाया। जसौतसिंह को चिट्ठी सुनाने के बाद पोस्टमैन दयाराम आगे के घरों की ओर चला जाता है। वह ब्राँच पोस्ट ऑफिस बेनीनाग में पोस्टमैन था।

पोस्टमैन दयाराम जब कभी लोगों को मनी आर्डर देने जाता था। तब लोग श्रद्धावश पहाड़ी टीले पर बने देवी, गगनाथ, हरू, सेम तथा भूमिया आदि के मंदिर में दीया जलाया करते थे और मनीआर्डर की रसीद को बताशों के साथ वहीं चढ़ा आते और साथ ही साथ भगवान से यह कहते कि ''हे परमेश्वर, मन्योडार ऐसे ही आते रहें। गोठ की गाय भीतर के पुरखे देवता ऐसे ही दाहिने होते रहे।'' (गद्य–फुलवारी, शैलेश–मटियानी, पोस्टमैन पृ. 60)

जब कभी दयाराम जंगली रास्तों से गुजरता था तब उसे अनेक पहाड़ी औरतों की व्यथा तथा पीड़ा भरे विरह–गीत विचलित करते थे। वह अक्सर यह देखता था कि ''पलटलिया स्वामी वाली हर औरत हिरन जैसी आँखें और खरगोश जैसे कान बना लेती हैं।'' (पृ. 61)

पोस्टमैन दयाराम मुवाणी गाँव में भी अपने कर्त्तव्य–परायणता का परिचय देते हुए दिखाई देते हैं। मुवाणी गाँव में दयाराम अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए धनसिंह के परिवार को स्वंय पत्र पढ़कर सुनाता है लेकिन धनसिंह की पुत्र–वधू अपने पति की मृत्यु का कारण दयाराम को ही समझती है। तार सुनाने के बाद दयाराम को धनसिंह की बहू की निम्न प्रतिक्रिया झेलणी पड़ती है जो इस प्रकार से है–''धनसिंह की बहू बिजली की चपेट में आइ हुई सी मुर्मातक चीखें मारती–दराँटी लेकर दयाराम को मानने दौडी थी– मर जाए पोस्टमैन तेरा पालने पोसने वाला जिसने तुझे ऐसे कुकरम

सिखाए। तेरी मां–बहनों के काल–चरणो क्या पहले ही टूट चुके कि यह पापी तार मेरे घर वज्र गिरने को लाया?'' (पृ. 61)

पोस्टमैन दयाराम धनसिंह को पुत्र वधु का अपने प्रति ऐसा व्यवहार देखकर दुःखी हो जाता है। दूसरी बार जब उसे फिर से पोस्टमास्टर दयालीराम पांडे जी कमस्यारी गाँव में तार लेकर जाने के लिए बोलते हैं तो दयाराम उनको अपनी तबीयत ठीक न होने का बहाना लगाकर मना कर देता है। तब दयालीराम पाँडे स्वंय उसके स्थान पर तार देने के लिए कमस्यारी गाँव जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। दयालीराम पांडे जी के जाने के बाद दयाराम के मन में तरह–तरह के विचार आने लगते हैं। दयाराम को यही लगता है कि उस तार में जरूर रतनसिंह नेगी की मृत्यु का समाचार होगा। यह सब सोचकर उसे दोपहर समय में चक्कर भी आने लगते हैं। वह अपनी ही दुष्कुल्पना के भँवर में फँसता जाता है। उसे चारों ओर अपनी कल्पना में रतनसिंह की विधवा की गालियाँ सुनाई पड़ रही थी। कुछ समय पांडे जी दयाराम को झकझोरते हुए पूछते है–''बुखार ज्यादा चढ़ आया है क्या बेटे दयाराम?'' (पृ. 65)

उसके बाद पाँडे जी दयाराम को बताते है कि जसौतसिंह की पुत्री जिसका विवाह अल्मोड़ा में हुआ था। उसने पुत्र को जन्म दिया है। उन्होंने मेरी खूब खातिर की, आते हुए आठ आने दक्षिणा भी दी, साथ ही एक समय का अनाज भी दे दिया। पांडे जी को यह सारी बातें सुनकर दयाराम ने पांडे जी के पैर पकड़ लिए, उसे ऐसा लगा जैसे उसकी कोई प्रेतबाधा दूर हो गई हो।

''पोस्टमैन'' कहानी में डाकिया दयाराम ने अनके स्थानों पर अपनी कर्त्तव्य–परायणता का परिचय दिया है। दयाराम का चरित्र भी अपने आदर्शो के प्रति समर्पित था। वह अपने कर्त्तव्य, उत्तरदायित्त्व को अच्छे ढंग से निभाता है। अपने अच्छे कर्मों और कार्यो के कारण ही गाँव के सभी लोग उसका आदर–सत्कार किया करते थे।